संगम Impact Factor : 4.553
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
A Peer Reviewed International Refereed Journal विशेषांक–समकालीन हिन्दी साहित्य और विमर्श Vol. 11, Issue 4
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक

Page No.: 676-685

समकालीन साहित्य में सांस्कृतिक विमर्श

डॉ0 राजेश वर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय,
श्री पी0एल मेमोरियल पी0जी0 कालेज,
बाराबंकी सम्बद्ध, डॉ0 राम मनोहर लोहिया
अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश।

अपर्णा द्विवेदी

एम0एड0 प्रथम वर्ष छात्रा
श्री पी0एल0 ममोरियल पी0जी0 कॉलेज,
बाराबंकी सम्बद्ध, डॉ0 राम मनोहर लोहिया
अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश।

सारांश – ' **सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया'** अर्थात् सभी सुखी होवें, सभी रोग मुक्त रहें, यह पंक्ति भारतीय संस्कृति की एक झलक मात्र है जिससे यह स्पष्ट हो रहा है कि भारतीय संस्कृति ने सदैव अखिल वैश्विक कल्याण की विचारधारा प्रतिपादित की और यही भावना भारतीय साहित्यिक चिंतन धारा का स्त्रोत रही है। साहित्य – शब्द सहित से बना है। सहित का भाव ही साहित्य कहलाता है। (सहित्यस्यः भावः साहित्यः) सहित के दो अर्थ हैं– साथ एवं हितकारी या कल्याणकारी अतः साहित्य के शाब्दिक अर्थ को देखते हुए कह सकते है कि सच्चा साहित्य ही भारतीय संस्कृति का पोषक होता है।

साहित्य किसी भी समाज की सुरूचि की पहचान होता है। वह सांस्कृतिक प्रबोध रचता है न कि विरोध या अवरोध। आलोचना भी साहित्य है। आलोचना रहित साहित्य लगभग निर्जीव होता है। आलोचना के अनेक साहित्यिक तर्को के साथ सांस्कृतिक तर्क भी एक तथ्य है। इस सांस्कृतिक तर्क का अर्थ है ऐसा साहित्य जो विचार समृद्ध होने के साथ मानवीय हो जिसमें सार्वभौम सदाशयता और सार्वभौम स्वीकृति के तत्व हों। इस प्रकार की ही मानवता एवं परोपकार के बारे में **तुलसीदास** जी की पंक्तियॉ सब कुछ बयाँ कर रहीं हैं – **''परहित सरिस धर्म नही भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमाई।''** अर्थात् परोपकार से बढ़कर कोई दूसरा धर्म नहीं है और किसी को दुःख पहुँचाने से बढ़कर कोई दूसरा अधर्म नहीं है।

संस्कृति को उसके स्थूल अर्थ में नही देखा जा सकता और न वह एक पक्षीय होती है। अनेक तहजीबों, आस्थाओं, धर्मो, जातियों, समाजों की अनेक धाराएँ संस्कृति के सागर में आकर एक हो जाती हैं। संस्कृति की विभिन्नताएँ मनुष्यता बनकर एक हो जाती हैं। इस एकत्व की मनुष्यता को रचने का काम साहित्य और कलाएँ करती है। इसके लिए वर्तमान परिप्रेक्ष्य को देखते हुए भारतीय संस्कृति और उसके महत्व के गहरे अर्थ संदर्भो को समझने की नितांत आवश्यकता है। कोई भी देश पहचाना जाता है उसकी संस्कृति से। इन प्रसिद्ध पंक्तियों को देखकर समझा जा सकता है –

''जहाँ डाल–डाल पर सोने की चिड़िया करती हैं बसेरा,
वो भारत देश है मेरा, वो भारत देश है मेरा।
जहाँ सत्य अहिंसा और धरम का पग – पग लगता डेरा,
वो भारत देश है मेरा, वो भारत देश है मेरा।''

किसी भी देश की संस्कृति वह मूल आधार है जो सभ्यता का मार्ग रचती है और उसे प्रशस्त बनाती है। वस्त्र निर्माण और तरह–तरह की वेशभूषा सभ्यता के साथ परिवर्तित होते रहते हैं, लेकिन वस्त्रों में शील और मर्यादा, उनका सौन्दर्य और उन्हे ऋतुओं के अनुरूप धारण करना संस्कृति है।

संस्कृति का मूल स्त्रोत हमारी वह विचार शक्ति है जो सभ्य और असभ्य मे भेद दिखाती है। साहित्य में जब हम भाषा, शैली, शिल्प, शब्द – विन्यास संरचना आदि को देखते है तो वह भाषा का भौतिक रूप होता है लेकिन एक लेखक, कवि, कथाकार जब उसमें विचार रचता है , अपनी कल्पना से संवेदन, सौंदर्य, प्रकृति और समाज के समस्त लोकचारों, विश्वासों को अभिव्यक्त करता है तो वह साहित्य सृजन से संस्कृति सृजन भी करता है।

प्रस्तुत शोधपत्र में साहित्य और संस्कृति, के अन्तर्सबन्धों का पूर्णतया सारगर्भित विश्लेषण है एवं प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से साहित्य और संस्कृति की परस्पर निर्भरता को सिद्ध करने का सार्थक प्रयास किया गया है।

<u>महत्वपूर्ण शब्द–</u> समकालीन, भारतीय संस्कृति, विमर्श एवं भारतीय हिन्दी साहित्य।

<u>प्रस्तावना –</u>

''युग– युग के संचित संस्कार, ऋषि मुनियों के उच्च विचार।

धीरो वीरो के व्यवहार, है निज संस्कृति के ऋंगार।''

–<u>मैथिलीशरण गुप्त</u>

साहित्य, समाज और संस्कृति तीनों एक तीन पहिया वाहन के तीन चक्के हैं अर्थात् किसी भी एक के अभाव में शेष दो असंभव प्रतीत होते हैं। समाज, साहित्य व संस्कृति दोनों का मूल होता है। समाज से ही हमारी संस्कृति विकसित हुई और इस संकलन को ही हम साहित्य की श्रेणी में रखते है। प्रस्तुत शोधपत्र के विषय में लिए शब्दों को भी समझना अत्यंत आवश्यक है। अतः संस्कृति , संस्कृति की विशेषताएँ, साहित्य एवं साहित्य और संस्कृति के अन्तर्सम्बन्धों की सरल शब्दों में व्याख्या की जा रही हैं।

<u>संस्कृति –</u> संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है, जो उस समाज के सोंचने–विचारने, कार्य करने, खाने–पीने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य, कला, वास्तु, आदि में परिलक्षित होती हैं। संस्कृति का वर्तमान रूप किसी समाज के दीर्घकाल तक अपनायी गई पद्धतियों का परिणाम होता है।

'संस्कृति' शब्द संस्कृत भाषा की धातु 'कृ' (करना) से बना है। संस्कृति का शब्दार्थ है– उत्तम या सुधरी हुई स्थिति। इस संदर्भ में एक विद्वान का मत है।

''**जिसबर्ट**'' के अनुसार, सभ्यता बताती है कि **'हमारे पास क्या है।' और संस्कृति यह बताती है कि, 'हम क्या हैं।'**

संस्कृति की विशेषताएँ – कुछ सामान्य विशेषताएँ जो संपूर्ण संसार की विभिन्न संस्कृतियों में समान हैं–

1. संस्कृति सीखी जाती है और प्राप्त की जाती है।
2. संस्कृति लोगों के समूह द्वारा बॉटी जाती है।
3. संस्कृति संचयी होती है।
4. संस्कृति परिवर्तनशील होती है।
5. संस्कृति गतिशील होती है।

साहित्य – डॉ0 त्रिलोचन पांडे के अनुसार,

''जन साहित्य या लोक साहित्य उन समस्त परम्पराओं, मौखिक तथा लिखित रचनाओं का समूह है जो किसी एक व्यक्ति या अनेक व्यक्तियों द्वारा निर्मित तो हुआ है परंतु उसे समस्त जन समुदाय अपना मानता हैं। इस साहित्य में किसी जाति, समाज या एक क्षेत्र में रहने वाले सामान्य लोगों की परंपराएँ, आचार – विचार, रीति–रिवाज, हर्ष–विषाद आदि समाहित रहते हैं।''

साहित्य और संस्कृति में अन्तर्सम्बन्ध– साहित्य व संस्कृति दोनो का काम और उद्देश्य एक ही है और साझे का है। साहित्य का कार्य एक शिक्षित समाज तक सीमित रहता है जबकि संस्कृति का पसारा जन–जन तक है। उस जन के अनजाने ही संस्कृति उनमें सम्पृक्त रहती है जबकि साहित्य जाने समझे रूप से अपना काम करता है। वैसे तो पूरी संस्कृति ही साहित्य हैं, पर संस्कृति में साहित्य हो, न हो , साहित्य में संस्कृति अनिवार्य रूप से अनुस्यूत होती है। संस्कृति के बिना साहित्य की गति नही, पर साहित्य की गति में संस्कृति भी अलग तरह से गतिशील रहती है। भाषा, समाज, सभ्यता, और सस्कृति के संबंध में पाश्चात्य विद्वान '**ग्रीन**' का मत दर्शनीय है–।

''एक संस्कृति तभी सभ्यता बनती है जबकि उसके पास एक लिखित भाषा, दर्शन विशेषीकरण युक्त श्रम विभाजन, एक जटिल विधि और राजनीतिक प्रणाली हो।''

साहित्य में सांस्कृतिक विमर्श– डॉ0 सरनाम सिंह शर्मा ने **''साहित्य को संस्कृति का इतिहास कहकर उसे अतीत का प्रतिबिम्ब तथा अनागत का प्रदीप माना है। साहित्य जन–मानस की अन्तबाह्य प्रतिछवियों का प्रकाशन करने वाला ज्ञान राशि का संचित कोश है।''**

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के शब्दों में , **''साहित्य ही समाज का दर्पण हैं।''** हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने हिन्दी साहित्य का काल विभाजन इस प्रकार किया है – आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिककाल।

आदिकाल के प्रमुख कवियों में से एक अमीर खुसरो खड़ी बोली की कविता के जन्मदाता थे तथा उन्होंने भारतीय संगीत को समृद्ध करने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया था। भक्तिकाल अपने विशुद्ध रूप में धर्म भावना का भावात्मक या रसात्मक रूप है जिससे भारतीय समाज और संस्कृति प्रतिष्ठा के

शिखर तक पहुँच गई। 'भक्ति द्राविड़ ऊपजी लाए रामानन्द' यह लहर दक्षिण से उत्तर तक फैल गई और उसके दो रूप प्रचलित हो गए सगुण और निर्गुण भक्ति। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामकथा की साहित्यिक और सांस्कृतिक दोनों परम्पराओं का समन्वय कर ऐसा अपूर्व काव्य प्रस्तुत किया जिसमें भारतीय संस्कृति और काव्य की युगलधारा प्रवाहित हुई। संतकाव्य परम्परा में कबीर, रैदास, मानक आदि प्रमुख हैं। इन सभी संत कवियों ने आचरण की शुद्धता पर बल देते हुए माया, पाखंडवाद और छुआछूत आदि का विरोध किया। ज्ञानमार्गी काव्य परम्परा में संत कबीर का स्थान प्रमुख है जिनकी वाणियाँ आज भी प्रासंगिक हैं।

रीतिकाल आते जाते राजा विलासी हो गए, जिसका चित्रण हमें रीति –कालीन साहित्य में दिखाई पड़ता है। विलासी राजाओं को खुश करने के लिए कवियों ने श्रृंगारपरक रचनाओं के ढेर लगा दिए। बिहारी, देव, मतिराम, केशव, आदि अनेक कवियों ने राजा की प्रवृत्तियों को खूब जगाया तो कुछ आचार्यो ने नैतिकता के संदर्भ में भी काव्य की रचना की। बिहारी, राजा जयसिंह के राजकवि थे। राजा जयसिंह अपने विवाह के बाद अपनी नव–वधू के प्रेम में राज्य की तरफ बिल्कुल ध्यान नही दे रहे थे तब **बिहारी** ने उन्हें यह दोहा सुनाया था–

'' नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास यहि काल'
अली कली मे ही बिन्ध्यो आगे कौन हवाल।''

आधुनिक काल को पुनः भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग एवं छायावादी युग में विभाजित किया गया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की कालजयी सृजन श्रृंखला में उनके चारो उपन्यासों की आधारशिला भारतीय सांस्कृतिक चेतना ही हैं, मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी राष्ट्रीय चेतना ' भारत भारती' मे भारत के अतीत का गुणवान किया है । उन्होने इस रचना मे बताया है कि हम भारतीयों का अतीत कितना महान था और वर्तमान कैसा हो गया है क्योंकि हमने अपने सभ्यता और संस्कृति को भुला दिया है। हमने दूसरे देशों की संस्कृति को अपना लिया है। **मैथिलीशरण गुप्त** लिखते है–

'' हम कौन थे क्या हो गए, जान लो इसका पता,
जो थे कभी गुरू, न अब शिष्य की भी योग्यता।,
जो थे सभी से अग्रगामी, आज पीछे भी नही,
है दिखती संसार में, विपरीतता ऐसी नहीं।''

इक्कीसवीं सदी के हिन्दी साहित्य राजनीति का अखाड़ा बन गया दलबंदी, गुटबंदी चरम पर पहुँच गई। भ्रष्टाचार, भाई–भतीजावाद, प्रांतवाद, जातिवाद साहित्य में दखल देने लगे। लोकतंत्र में 'लोक' कहीं तिरोहित हो गया 'तंत्र' सर्वत्र प्रभावी हो गया। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में **'शमशेर'** जी की यह कविता बेहद समीचीन प्रतित होती है –

'' ओ युग आ मुझे
और लिए चल , जरा सा,
और गा, कुछ ऐसे गा,
कि मै सुनूँ और झूँमू।''

इस प्रकार आज का साहित्य मनुष्य की चिंता को लेकर संघर्षशील है। मानवमूल्य और उसका निर्धारण सदी की सबसे बड़ी चुनौती है।

अध्ययन का उद्देश्य–

1. संस्कृति के स्वरूप का अध्ययन करना।
2. संस्कृति का समाज पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. संस्कृति की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
4. संस्कृति में सांस्कृतिक चेतना पर विचार– विमर्श करना।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण–

1. चौधरी, राधाकृष्ण (1985), '' प्राचीन भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास''
2. शर्मा, पं0 श्रीराम (1998), '' भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व''

शोधविधि – प्रस्तुत शोधकार्य करने हेतु विवरणात्मक, ऐतिहासिक एवं दार्शनिक विधि का अनुसरण करते हुए विषयवस्तु विश्लेषण के माध्यम से शोधकार्य को पुस्तकालय की पुस्तकें , प्राचीन भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित मौलिक साहित्य सम्बन्धित पुस्तको, पत्र–पत्रिकाओं की सहायता से पूरा करने का भरसक प्रयास किया जायेगा।

निष्कर्ष – निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि वास्तव में हर देश का साहित्य उस देश की लौकिक सभ्यता एवं संस्कृति, मातृभाषा, लोकगीत, लोक भाषाओं, जन भाषाओं तथा तत्कालीन परिस्थितियों (सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, राजनीतिक) को भी उजागर करता है। साहित्य एक राष्ट्र की धरोहर है, उसका अभिमान है, गौरव है, पहचान है।

'भा' का अर्थ हुआ प्रकाश। ''रत'' का अर्थ है संलिप्तता यानि भारत का अर्थ हुआ प्रकाश में दत्तचित्त होकर अनुष्ठान करने से संप्राप्त संस्कार और संपन्नता। यही भारतीय संस्कृति है। प्रत्येक साहित्यकार को भारतीय संस्कृति की गरिमा बनाए रखने का उत्तरदायित्व अपना कर्तव्य समझते हुए पूर्ण करना चाहिए क्योंकि –

'' केवल मनोरंजन ही न कवि का कर्म होना चाहिए,
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।''

भारतीय साहित्य में '' विश्व मानव'' (वैश्विक एकता) और वसुधैव कुटुम्बकम की जो भावना है, वह विशुद्ध भारतीय संस्कृति की महानता, विशालता , निः स्वार्थपरता, लोक कल्याणकारी भावनाओं की परिचायक है। हमारा साहित्य समाज को न केवल ज्ञान, बोध और मूल्य प्रदान करता है अपितु एक चिंतन की दिशा भी प्रदान करता है ताकि हम सभी यथासंभव प्रयास कर सके जिससे कि भारतीय मूल्य, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति, भारतीय साहित्य का विश्व में सदैव उच्चस्थ स्थान बना रहे तथा

भारत पुनः ''जगद्गुरू'' (विश्वगुरू) की उपाधि प्राप्त करे वो भी अपने अक्षय साहित्य, विशुद्ध सभ्यता एवं अलौकिक संस्कृति के बल पर।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. मिश्र दयानिधि; मिश्र, उदयन तथा उदय, प्रकाश (2017); हिन्दी साहित्य में सांस्कृतिक संवेदना और मूल्यबोध. (प्रथम संस्करण) दरियागंज नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन
2. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (2022) : भारत – सांस्कृतिक विविधता में एकता. (प्रथम संस्करण), नई दिल्ली : एन0सी0ई0आर0टी0 कैंपस
3. उमराव, शिखा (2020) : हिन्दी साहित्य के विकास में भारतीय संस्कृति की अवधारणा. International Journal of Innovative Social Science & Humanities Reseach , 7 (4), 16-19
4. कुमार, प्रफुल्ल; लोक साहित्य के स्वरूप एवं विशेषताओं के साथ इसके महत्व. 1 – 10
5. कुमारी, पुष्पा (2020); मध्यकालीन साहित्य और साहित्य और संस्कृति का ऐतिहासिक परिदृश्य. International Journal of History , 2 (2) , 69-71
6. कुमारी, विजय (2018); आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्य में सांस्कृतिक चेतना. world wide Journal of multi disciplinary Research and development , 4 (2), 93- 95
7. **दुबे, माया** (2021); इक्कीसवी सदी के हिंदी साहित्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ.
8. देवी, शर्मिला (2021); पाश्चात्य प्रभाव के कारण भारतीय संस्कृति और साहित्य में परिवर्तन अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका Peer Reviewed Refered **शोध पत्रिका , 9** (3) , 51–56
9. मकादिया, अनिल एम. (2013); हिन्दी साहित्य के धरोहर सांस्कृतिक चेतना. Indian Journal of applied Research , 3 (1), 90
10. **राठी, सोनिया** (2018); प्रवासी हिन्दी कथा साहित्य में सांस्कृतिक संघर्ष. International journal of Reseach and Analytical reviews, 5 (3), 441-445
11. वासुदेवन, पी0आर0 (2019); वैश्विक परिदृश्य में साहित्य और भारतीय संस्कृति. लेखापरीक्षा प्रकाश , 41–46
12. सैनी, सुभाष चन्द्र (2016); माध्यमिक स्तर पर भारतीय संस्कृति में निहित विभिन्न वैज्ञानिक तथ्यों का अध्ययन. शिक्षाशास्त्र में प्रकाशित पी0एच0डी0 शोध प्रारूप, बुनियादी शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय सीटाई गॉधी विद्यामंदिर, राजस्थान , 1 – 11

Name – Aparna Dwivedi
College Add- Shri P.L. Memorial P.G. College,

Sagar Campus, 6th Km. Stone, Faizabad Road,
Barabanki, Uttar Pradesh, 225001
Mob No : 9305458299,
Email Id – dwivedisumanashok@gmail.com